संस्थापित १८६७ ई.

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ १०००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ २.००

● वर्ष : १२० ● अंक : १२ ● २४ मार्च, २०१५ चैत्र कृष्ण पंचमी, सम्वत् २०७२ ● दयानन्दाब्द १६१ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११६

देश में बढ़ते ढोंग पाखण्ड से हमारी संस्कृति विनष्ट हो रही है-उसकी रक्षा के लिए हम प्रतिबद्ध हों।

देवेन्द्र पाल वर्मा, प्रधान

आजकल धर्म के नाम पर ढोंग और पाखण्ड तथाकथित धर्माचार्यो द्वारा खूब फैलाया जा रहा है। धर्म प्रचार के नाम पर टी.वी. के अनेक चैनलों का इस कार्य के लिए उपयोग किया जा रहा है। फलतः धर्म व संस्कृति विनष्ट हो रही है। महर्षि दयानन्द जब समाज के कार्यक्षेत्र में उतरे थे तब देश पराधीन था। ढोंग पाखण्ड फैलाकर तथाकथित धर्माचार्य हमें धर्म से विलग कर रहे थे हमें भीरू डरपोक बना रहे थे। गुरू वाक्य को ब्रह्मवाक्य कहकर हमें चिन्तनहीन बना रहे थे। नारी मातृशक्ति का स्वत्व समाप्तप्राय था, वह पददलित थी अशिक्षित थी उसका नौकरानी की तरह इस्तेमाल किया जा रहा था। वह अबला कही जाती थी। छुआछूत जाति पांति का भेद समाज को विनष्ट कर रहा था।

महर्षि ने पराधीनता के मूल में इन सभी बुराईयों को गहराई से देखा था। इन सभी बुराइयों से मुक्त भारत बनाने के लिए धर्म व संस्कृति की सुस्थापना के लिए आर्य समाज की स्थापना की थी और स्पष्ट तौर पर कहा था कि यह कोई नया मत या सम्प्रदाय नहीं है। यह एक आन्दोलन है। आन्दोलन से जन जागृति आती है। अतः सभी दोषों से मुक्त सुखी समृद्ध देश बनाने के लिए यह आन्दोलन तीव्र गति से चलना चाहिए, ऐसी हमारी इच्छा है। आन्दोलन तीव्र गति से चला। ढोंग पाखण्ड के प्रति जनमानस में अरूचि आने लगी। गुरू के वचन को ब्रह्मवाक्य मानने की बजाय सत्यासत्य विवेचन का विवेक जगने लगा। शिक्षा प्रसार के लिए विद्यालय खुलने लगे। नारी अबला नहीं सबला है की भावना प्रदीप्त होने लगी। नारी अपने स्वत्व को पहचानने लगी। मानवमात्र एक जाति है इसकी समझ आने लगी। ऊँच नीच, जाति पांति का भेद मिटने लगा। सभी संगठित होकर राष्ट्रोन्नति की चिन्ता करने लगे। मठाधीशों तथाकथित धर्माचार्यो को अपना व्यापार ढहता नजर आया फलतः उन्होंने महर्षि को ईसाइयों का एजेण्ट, नास्तिक आदि कहना प्रारम्भ किया। ऋषि ने धर्म की स्थापना के लिए तथाकथित विद्वानों को शास्त्रार्थ के लिए ललकार लगायी। अनेकों शास्त्रार्थ हुए। पाखण्ड ढहने लगा। स्वराज्य स्थापना की भावना उदित होने लगी। स्वराज्य आन्दोलन चला जिसमें आर्य नर नारियों ने भारी संख्या में भाग लेकर देश को स्वतंत्र कराया। अपने देश का संविधान बना जिसमें महर्षि दयानन्द के सभी मंतव्यों को समाहित किया गया। आजादी के बाद हमारे नेताओं ने देश की भौतिक समृद्धि की ओर अपना ध्यान केन्द्रित किया भौतिक समृद्धि होने लगी। आर्य समाज आन्दोलन शिथिल सा होने लगा। शायद यह समझा गया कि अब हमारे राजनेता देश को सभी प्रकार से सुखी बनाने में समर्थ होंगे। फलतः धीरे धीरे नैतिक चरित्र का ह्रास होने लगा। विदेशी शिक्षा से शिक्षित हमारे नेताओं ने धर्म के स्वरूप को ही नही जाना। मत सम्प्रदायों को धर्म मान लिया। संविधान में वर्णित पंथ निरपेक्ष शासन व्यवस्था के नाम पर धर्म निरपेक्ष शासन व्यवस्था कहकर सभी मत सम्प्रदायों को पूरी तरह से बढ़ने की छूट दे दी।

धर्म अपरिवर्तनीय है। सबका धर्म एक है। मत समय-समय पर बदलता रहता है। हर व्यक्ति का विषय विशेष पर मत भिन्न हो सकता है परंतु धर्म नहीं बदल सकता। परंतु सरकार ने किस धर्म का अर्थ बिना समझे सभी मतों को धर्म मान लिया और धर्म के नाम पर मतों के प्रचार में छूट हो गयी। सभी अपने अपने मतों के प्रचार के लिए पूरी शक्ति लगानी आरम्भ कर दी। ईसाई और इस्लाम मतावलम्बी ने इसका भरपूर लाभ उठाकर मत परिवर्तन बहला कर फुसलाकर धमका कर कैसे हो कराने में लग गये। जिससे कुछ प्रबुद्ध लोगों ने इन दोनों के प्रचार को भारतीय संस्कृति के लिए अपशकुन मानकर इसका विरोध करके इसपर रोक लगाने के लिए मतान्तरित लोगों को अपने मत में पुनः वापस लाने की मुहिम चलायी। स्वेच्छा से अपने मत में लौटने वाले को सुविधा दी।

स्वाधीनता के बाद देश की स्वतंत्रता को गणतंत्रात्मक व्यवस्था के रूप में मान्यता दी गयी। वोट के आधार पर सरकार बनाने का अधिकार सभी पार्टियों को मिला। सत्ता प्राप्ति की लालसा में राजनेताओं ने वोटर को अल्पमत व बहुमत के नाम पर विभाजित किया तो अल्पसंख्यकों ने अपने अपने विशेष अधिकारों की आवाज उठानी शुरू की। वोट पाने के लिए राजनेता उनकी मांगों के आगे झुकने लगे। उनकी पृथकता की मांगों को भी सही घोषित करने लगे। धर्म के नाम पर विविध मत-मतान्तर अपना ढोंग पाखण्ड फैलाने में पूरी शक्ति से जुट गये। विदेशी अपसंस्कृति ने भी अपने पैर पसारने शुरू किये। आज वह अपसंस्कृति ही-प्रोग्रेसिव होने की सूचक बन रही है।

फलतःआज महर्षि के आगमन काल से भी ज्यादा ढोंग पाखण्ड फैलकर विदेशी सत्ता की मानसिकता वाले अपसंस्कृति को ही संस्कृति बना रहे हैं। देश को नष्ट करने में लग गये हैं।

परंतु आर्य समाज के सदस्यगण मानों प्रमाद निद्रा में इतने मगन है कि यह सब उन्हें दिखाई नहीं पड़ रहा है। यदि हमने अपना आलस्य प्रमाद नहीं छोड़ा तो हमारा देश पुनः पराधीन हो जायेगा। अतः सभी आर्यजन जागें और महर्षि दयानन्द के सपनों का भारत बनाने के लिए आर्य समाज आन्दोलन को तीव्रगति से चलाने के लिए सन्नद्ध हो जायें। इसके लिए हमें अपने निजी स्वार्थो हितों की उपेक्षा करके देश हित को ही सर्वोपरि बनाना होगा। हम सभी मनसा वाचा कर्मणा आर्य बनकर सभी फैलते ढोंग पाखण्ड से रहित सुख समृद्धिपूर्ण सुसंस्कृत देश बनाने का जब संकल्प ले लेंगे और आर्य समाज आन्दोलन को पूरी ऊर्जा से चलायेंगे तो निश्चय ही ऋषि दयानन्द का स्वप्न साकार होगा। भारतीय संस्कृति की रक्षा होगी। सुख समृद्धि से परिपूर्ण सुसंगठित सुसंस्कृत भारत बनकर सारे विश्व का मार्गदर्शक बनेगा और कृण्वन्तो विश्वमार्यम् की अवधारणा साकार होगी।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.

वेदामृतम्

ओ३म् त्वं सत्य इन्द्र धृष्णुतेतान्त्वमृमुक्षा यर्यस्त्वं षाट्।
त्वं शुष्णं वृजेन पृक्ष आणौ यने कुत्साय द्युमते सचाहन्।।..ऋग्वेद १/६३/३

प्रस्तुत वेदमन्त्र में प्रभु स्मरण और उनकी कृपा से काम क्रोधादि शत्रुओं का संहार करने की प्रेरणा की गई है। परमात्मा नियमित और व्यवस्थित जीवन वालों में निवास कर काम क्रोधादि शत्रुओं का पराभव करने वाले हैं। ज्योतिर्मय मनुष्यों में गुणों का मिश्रण, दोनों का अभिश्रण, वासनाओं का हिंसन कर इन असुरों को मारते हैं। प्रभु स्मरण से शक्ति की प्राप्ति होती है जिससे वह उत्साहित होकर, प्रभु को अपने साथ जानकर शक्ति का अनुभव करता है और काम क्रोधादि शत्रुओं का संहार कर पाता है।

काम क्रोधादि शत्रुओं का संहार करने के लिये हम प्रभु स्मरण से शक्ति प्राप्त करें।

क्रोध से धनी व्यक्ति घृणा का पात्र बनता है।

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
सम्पादक

सम्पादकीय.....

शिक्षा मंदिर को व्यापार केन्द्र बनाना महापाप–सरकार इसे रोके

शिक्षा का नया सत्र प्रारम्भ होने का समय आ गया है। अभिभावक अपने बच्चों को सुशिक्षित बनाने के लिए शिक्षा मंदिर में भेजने की भावना सुनिश्चित करते हैं। चाहते हैं कि उनका बच्चा उत्तम विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करके विद्वान बनकर कुल का गौरव बनें। आबादी बढ़ने के अनुरूप ही तमाम अशासकीय विद्यालय खुलते जा रहे हैं। शासकीय विद्यालयों में शिक्षा का स्तर निम्नतम् है। अतः अभिभावक अपने बच्चों को वहाँ भेजने में संकोच करते हैं। इसका लाभ अशासकीय विद्यालय के प्रबन्धकगण मनमानी फीस अभिभावकों से वसूल करके उठाते हैं। अधिक से अधिक धन वसूलने की योजनायें तैयार करते हैं। शिक्षा के स्तर को उठाने में कोई रूचि नहीं लेते हैं।

आजकल नये सत्र की सामग्री की खरीददारी के लिए अभिभावक परेशान हैं। विद्यालयों में पाठ्यक्रम में सह पुस्तकों के नाम पर नयी नयी पुस्तकें प्रतिवर्ष बदली जाती व उनकी मनमाने मूल्य पुस्तक पर छापकर प्रकाशक विद्यालय के प्रबंधकों को भारी कमीशन देकर लगवाने में प्रयत्नशील रहते हैं और उनकी अनिवार्य खरीद के लिए अभिभावकों की जेब काटी जाती है। विद्यालयों ने अपनी अपनी दुकाने भी फिट कर ली हैं जहां से ही पुस्तकें व कापियां आदि बण्डल के रूप में मनमाने मूल्य पर लेनी होंगी। यदि आप उनके मनमाने मूल्य पर कापियां आदि नहीं लेना चाहते तो खाली पुस्तकें आपको नहीं मिलेंगी। यदि पाठ्यक्रम में शासन द्वारा निर्धारित पुस्तकों के साथ उनके द्वारा निर्धारित सह पुस्तकें आप नहीं लेना चाहेंगे तो आपको बिना उनके पुस्तकों का बण्डल नहीं मिल पायेगा।

सरकार सभी को सुशिक्षित बनाने की भावना का प्रचार तो करती है परंतु अशासकीय विद्यालयों पर उसका कोई नियंत्रण न होने से धनाभाव में बहुत से बच्चे पढ़ नहीं पा रहे हैं। जो अभिभावक सम्पूर्ण शक्ति लगाकर भी बच्चों को पढ़ाना चाहते हैं उनकी धनाभाव से कमर टूट रही है।

सरकार का धर्म है सुशिक्षा प्रसारण की घोषणाओं तक ही नहीं उसकी व्यवस्था व कार्यविधि पर भी ध्यान दें। सरकार को चाहिए कि वह शासकीय व अशासकीय सभी विद्यालयों में पाठ्यक्रम की पुस्तकें एक ही सुनिश्चित करके सह पुस्तकों के नाम पर मनमानी पुस्तकें लगाकर धन उगाही पर सख्ती से प्रतिबंध लगाये। यह भी सख्ती से नियम बनाये जाये कि पुस्तकें कापियां आदि बच्चे व अभिभावक किसी भी दुकान से खरीदने के लिए स्वतंत्र हों। साथ ही सभी विद्यालयों में प्रत्येक कक्षा की फीस एक समान हो। सभी शासकीय व अशासकीय विद्यालयों में विविध कार्यो के नाम से विद्यालय प्रबन्धकों द्वारा फीस वसूलने को भी सख्ती के साथ रोका जाये। ताकि सभी गरीब अमीर अपने बच्चों को विद्यालयों में अनिवार्यतः पढ़ाने के लिए मनोयोग से जुटें। हमारे बच्चों की शिक्षा उत्तम हो बच्चें पढ़कर सुयोग्य नागरिक बनकर राष्ट्र के गौरव को बढ़ाने में समर्थ बनें।

आशा है सरकार इसपर गम्भीर चिन्तन करके सभी विद्यालयों में इसके अनुपालन के लिए यथावश्यक सख्ती का प्रयोग करेगी और सभी को शिक्षा प्राप्ति का अवसर दिलायेगी।

-सम्पादक

प्राचीन भारत में विज्ञान

प्राचीन भारतीयों का वैज्ञानिक ज्ञान अत्यन्त उच्च कोटि का था। उनके वैज्ञानिक ज्ञान की झलक उस समय की विज्ञान की पुस्तकों के अवशिष्ट पन्नों से लगती है।

१. प्राचीन भारतीय चुम्बक, चुम्बकीय क्षेत्र तथा चुम्बकीय तरंगों के विज्ञान को जानते थे। वे चुम्बकीय तरंगों की सहायता से छुपी हुई धातु वस्तुओं का चित्र पर्दे पर प्राप्त कर लेते हैं।
देखिये वृहद विमान शास्त्र- पेज-१५१

''उक्तेषु मणि वर्गेषु प्रतिबिम्ब अपकर्षणे।
शास्त्रज्ञैः चुम्बकमणि श्रेष्ठं इति उच्यते क्रमात्।।४७।।

अर्थ- छुपी धातु वस्तुओं का प्रतिबिम्ब प्राप्त करने के लिए चुम्बक मणि सर्वश्रेष्ठ होती है। वैज्ञानिकों का ऐसा मत है।

२. चुम्बकीय तरंगों की सहायता से जिस पर्दे पर चित्र बनता है, उसको बनाने में जिस केमिकल कम्पाउंड का उपयोग होता था उसे पारगन्धिक द्रावक कहते थे। उसके बनाने की विधि विमान शास्त्र के पेज-१५१ पर लिखी है। उसके विषय में श्लोक ४७ है-

''उपयुक्तं भवेत् तस्मात् पारगन्धिक द्रावकम्।
सम्पादयेत् विशेषेण प्रतिबिम्ब अपकर्षणे।।४७।।

अर्थ- पारगन्धिक द्रावक का उपयोग छुपी वस्तु का प्रतिबिम्ब प्राप्त करने के लिए किया जाता है।

३. कुछ वृक्षों से अदृश्य किरणें निकलती है। इनका उपयोग छुपी वस्तुओं का प्रतिबिम्ब प्राप्त करने के लिए किया जाता था।
देखिये वृहद विमान शास्त्र के पेज-१५०

''प्रतिबिम्ब अपकर्षणे आदि शक्तयः पंच सर्वदा।
यतः अंजिष्ठ वृक्ष गर्भे प्रकाश्यन्ते स्वभावतः।।३६।।

अर्थ- वृक्षों में यह अंजिष्ठ वृक्ष ही यंत्र क्रिया विधि में अत्यंत श्रेष्ठ है। यह कथन अदृश्य रश्मि विज्ञान की पुस्तक ''अगतत्व लहरी'' से लिया गया है।

४. बिम्ब आकर्षण निर्यास-

प्रतिबिम्ब ग्रहण करने वाले गोंद जैसे यथार्थ को बिम्ब आकर्षण निर्यास कहते हैं। इसको बनाने की विधि लिखी है। इसके विषय में पेज १५२ पर श्लोक ५१ में कहा है।

''षष्टी उत्तर त्रिशत् निर्यास वर्गेषु ज्ञान वित्तमा।
रूप आकर्षण निर्यासं प्रतिबिम्ब अपकर्षणे।।५१।।

अर्थ- ३६० निर्यास वर्गो में रूप आकर्षण निर्यास प्रतिबिम्ब आकर्षण में अत्यन्त श्रेष्ठ कहा है। निर्यास गोंद जैसा पदार्थ होता है जिससे प्रतिबिम्ब करने वाला पर्दा बनता है।

५. पटदर्पण का निर्माण-

छुपी वस्तु का चित्र लेने वाला पर्दा - पेज १५३ पर निर्यास पट दर्पण बनाने की विधि लिखी है। उसका वर्णन श्लोक ६७ में इस प्रकार है।

''एवं कृते सूक्ष्म अतीव शोभितं भवेद् दृढं तत् पट दर्पण शुभम्।
परोक्ष वस्तु प्रतिबिम्ब संग्रहे तु सतत् पट आदर्श इतः इतं बुद्धै।।६७।।

अर्थ- ऐसा करने पर सूक्ष्म अतीव शोभित दृढ शुभ दर्पण हो जावे जो छिपी वस्तु का प्रतिबिम्ब लेने में यह परदा विद्वानों ने श्रेष्ठ बताया है।

६. यह स्क्रीन वाला यंत्र विमान में कहां लगे तथा इसका लाभ क्या है। यह निम्न श्लोक ६८ में पेज १५३ पर बताया है- ''यान कुक्षि मुखे तु एतत् यंत्रं संस्थापयेद् दृढम्।
एतस्मात् संभवेत् यान त्रासानं न अत्र संशय।।५१।।

अर्थ- विमान के कुक्षि मुख में इस यंत्र को दृढ़ स्थापित करे। इससे विमान की रक्षा हो जावे इसमें संशय नहीं है। कुक्षि मुख-**Pilot Colin**

७. इस प्रकार छिपी वस्तु का प्रतिबिम्ब प्राप्त करने के लिए विद्युत चुम्बक तरंगों का प्रयोग होता था जो श्लोक ११ पेज १४७ से स्पष्ट है।

''संधारयेत् दृढ़ पश्चात् पारग्रंथिक द्रावके।
स्थापयेत् चुम्बक मणि तंत्रीमूलाः च तत्मुखे।।११।।

अर्थ- पारगंधिक द्रावक में चुम्बक मणि को तथा विद्युत तारों को स्थापित करें।

पारगन्धिक द्रावक- The name of a Chemical that makes the picture of the hidden object with the help of electromagnetic waves. The revival of Vedic Science is very necessary and important to understand our Rishis the Vedic Scienctists.

हमारे वैदिक ऋषियों के पास विज्ञान का अत्यन्त उच्च कोटि का ज्ञान था। उनको समझने के लिए वैदिक विज्ञान का पुनः उदय होना अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा आवश्यक है। यह हमारा कर्तव्य है कि हम वैदिक विज्ञान को फिर से जीवित करें तथा विद्यार्थियों को वैदिक विज्ञान एक विषय के रूप में पढ़ाया जाये। हमारे प्राचीन ग्रंथों में इस प्रकार के यंत्रों का वर्णन मिलता है जो मानसिक संकेतो (Mind Signals) पर कार्य करते थे। अभी तक केवल Sound Signal पर काम करने वाले यंत्रों का ही आविर्भाव हुआ है।

कृपाल सिंह वर्मा
२५३, शिवलोक, कंकरखेडा
मेरठ।
मो. ६६२७८८७७८८

धरोहर.....

अनुव्रत पितुः पुत्रो-पुत्र पिता के अनुव्रती हों

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ.प्र., लखनऊ।

अथर्ववेद के मंत्र का यह चतुर्थांश हैं आर्य समाज के उपदेशक अपने प्रवचनों में प्रायः उपदेश देते हुए इस वाक्य से समझाते हैं कि हमारा परिवार वैदिक परम्पराओं से युक्त हो पुत्र पिता के अनुव्रती हो उनकी आज्ञा का पालन करने वाले हों। माता के द्वारा मन के नियन्त्रण करने का उपदेश हो वह सबके मन की बात समझकर उनके खान पान एवं स्वास्थ्य का ध्यान करें पत्नी अपने पतिदेव के प्रति मधुर भाषिणी हो परिवार को कल्याणकारी वाणी द्वारा सुन्दर स्वरूप तैयार किया जाये, ऐसा हमारा परिवार होगा तो उसे ही वैदिक परिवार अथवा आदर्श परिवार कहा जायेगा उसके ही साथ कुछ मंत्र है जो भाई भाई में स्नेह आत्मीयता भ्रातृत्व की भावना का उपदेश है बहिन के लिए भी ऐसा ही सन्देश है अथर्ववेद में ऐसे सुन्दर परिवार बनाने के लिए प्रत्येक भाई के लिए प्रत्येक बहिन के लिए, प्रत्येक पति-पत्नी के लिए एवं प्रत्येक पिता पुत्र के लिए यह संदेश है किसी के साथ कोई भेदभाव अथवा पक्षपात की भावना देश काल के आधार पर नहीं गरीबी अमीरी या जाति बिरादरी विशेष के लिए नहीं वर्तमान में किसी राजनैतिक पार्टी सपा, बसपा, भाजपा, कांग्रेस की भी बात नहीं, ठाकरे की तरह कोई प्रांतवाद भी नहीं है सभी मानव मात्र को यह सन्देश है आजकल गुरूडम चल रहे हैं। धर्म के नाम पर कई प्रकार के पन्थ-सम्प्रदाय मजहब चल रहे हैं उनमें भी किसी से भेदभाव नहीं है सभी पन्थ और सम्प्रदाय इस बात को स्वीकार करते हैं और वे भी इसी प्रकार का अपना परिवार बनाना चाहते हैं क्योंकि यह वाणी वेद वाणी है जो परमात्मा प्रदत्त है इस ज्ञान सागर में जो भी गोता लगायेगा वहीं सुखी जीवन जीने का अधिकारी बनेगा आवश्यकता इस बात की है कि आप किसी भी माध्यम से अपने मन को शिव संकल्प के साथ तैयार करें अपनी मानसिक चेतना को परिवार के प्रति समर्पित करें अपने लक्ष्य को निर्धारित करें अपने ऊपर भी आपको पूर्ण नियंत्रण करना होगा मनसा वाचा-कर्मणा उसे व्यवहार में उतारने के लिए तपश्चर्या करनी होगी। आत्मचिंतन के द्वारा अपना आत्म निरीक्षण भी करना होगा। प्रतिदिन प्रातःकाल ब्रह्ममुहूर्त में जैसा कि मनुस्मृति में आया है- ब्राह्मेमुहूर्ते बुध्येत धर्मार्थौ चानुचिन्तयेत्। कायक्लेशांच तन्मूलान् वेदतत्त्वार्थमेव च।। प्रातः काल ब्राह्ममुहूर्त में उठकर आप अपना आत्म निरीक्षण प्रारम्भ करे कि मेरे जीवन में क्या न्यूनता रह गई है जो परिवार अभी मेरे अनुकूल नहीं हो पा रहा है मुझे क्रोध-आलस्य-प्रमाद जैसे दुर्गुणों ने अपना दास तो नहीं बना लिया है स्वास्थ्य ठीक है फिर दिनचर्या में धार्मिक वातावरण तैयार करने के लिए स्वयं कितना समय दे पा रहा हूँ। आर्थिक स्थिति के लिए कितने समय और पुरूषार्थ की अपेक्षा है उसे पूरा करने के लिए किन किन साधनों की अपेक्षा है उसे पूरा करने के पश्चात् संस्कार और शिक्षा के लिए कैसा प्रयास चल रहा है? वह आपके सामर्थ्य के अनुसार होना अपेक्षित है यदि न्यून है तो उसे बढ़ाने का प्रयास करना है यदि बढ़ा हुआ है तो उसके नैरन्तर्य की आवश्यकता है। यदि प्रतिदिन निरन्तरता नहीं है तो भी परिणाम आशाजनक नहीं मिलेगा। जैसे परीक्षा काल में छात्र परीक्षा की तैयारी करता है याद किया हुआ पाठ पुनः स्मरण करता है जो याद नहीं है उसे स्मरण करता है प्रतिदिन के अभ्यास से छात्र निश्चिन्त होकर परीक्षा में निर्भय रहता है और अच्छे अंक प्राप्त करके स्वयं प्रसन्न होता है तथा परिवार के सदस्यों एवं अपने गुरूजनों को भी प्रसन्न करता है इसी प्रकार वह व्यक्ति जो अपने परिवार को अपने अनुकूल परम्परा से रखना चाहता है उसके लिए भी इतनी ही तन्मयता सावधानी समर्पण एवं प्रतिदिन अभ्यास की आवश्यकता है।

प्रायः हमारी सभी की भावना तो रहती है कि मेरा परिवार अच्छा हो बच्चे आज्ञाकारी हो, हमारी श्रीमती मधुरभाषिणी हो, अन्य जो विशेषतायें ऊपर कहीं है वे सब प्राप्त हों उसके लिए प्रयास कितना करना है, कैसे करना है। व्यावहारिक रूप में जब तक आचरण नहीं करेंगे तब तक हम उसका पूरा लाभ नहीं उठा सकेंगे। वेद की शिक्षा के प्रति विश्वास भी तभी प्राप्त कर सकेंगे।

विश्वास के पश्चात् ही उसमें श्रद्धा-आस्था हो पाती है तभी वह उत्साहित होकर निष्ठा से कार्य करता है। प्रत्येक व्यक्ति परिणाम चाहता है पुरूषार्थ करना नहीं चाहता इसीलिए आज हमारे परिवार टूटते जा रहे हैं पुरानी पीढ़ी के लोग सामूहिक परिवारों में रहकर उन्नति करते थे सभी प्रसन्न एवं निश्चिन्त रहते हुए अपने पुत्रों का चरित्र निर्माण करके अपने पितृ ऋण से मुक्त होने का प्रयास चलता रहता था। आज हमारी यह पुरातन परम्परा का लोप हो रहा है जिसका दुष्परिणाम आपके समक्ष है। अभी तक वैदिक परम्परा किसी न किसी रूप में ग्रामों में सुरक्षित थी आज पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव नगरों से ग्रामों की ओर भी प्रभावी हो गया है। आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदों की ओर लौटो का नारा देकर यही बताने का प्रयास किया था कि वेद सृष्टि के आदि में परमात्मा ने ऋषियों के माध्यम से जो ज्ञान दिया है वह मानव मात्र के कल्याण के लिए है उसमें हम किसी भी वर्गवाद में आकर यदि इस मार्ग से द्वेष करते हैं तो स्वयं अपनी ही हानि है। मानवता का हनन है। आसुरी वृत्तियों का जन्म हो जायेगा और आपके परिवार में राक्षस जन्म लेकर पूरे घर को लंका जैसा वातावरण बना देंगे। हमें अयोध्या जैसा वातावरण बनाना है। जहां राम लक्ष्मण का स्नेह और राम-भरत जैसा त्याग समर्पण दिखाई देगा माता कौशल्या के संस्कार परिवार में रामराज्य लाने में सहयोगी बनेंगे। हमारी भी यही इच्छा ऐसे अच्छे परिवार को प्राप्त करने की रहतीहै उसके लिए केन्द्र बिन्दु वैदिक परम्परा से ही जुड़ना होगा इसके अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग नहीं है।

''नान्यः पंथा विद्यतेऽयनाय'' अतः स्वयं को सुखी बनाने के लिए वेदानुकूल जीवन जीने का संकल्प लें।

उदाहरण के रूप में आपको विदित कराना चाहता हूँ कि १६७० से लेकर २००० तक एक समय ऐसा आया कि आर्य समाज शताब्दी एवं आर्य महासम्मेलन देश भर में बड़े रूप में आयोजित होने लगे उस अवसर पर यदि शोभायात्रा निकलती थी तो उसके संयोजक श्री रामनाथ जी सहगल आर्य युवा नेता हुआ करते थे। शोभायात्रा की व्यवस्था पूर्ण अनुशासन में रहती थी और अंत में उसकी सफलता का श्रेय मान्य सहगल जी को ही जाता था। इनके व्रत का अनुपालन करने के लिए अपने सुपुत्र श्री अजय सहगल जी को तैयार किया संस्कार दिये वातावरण बना कर उन्हें मानसिक रूप से तैयार किया वे भी आधुनिक आर्य पुत्रों की तरह अपनी नई दुनिया में रहते हुए परिवार पोषण में संलग्न हो सकते थे लेकिन अपने पिता जी के प्रत्येक कार्य में उनका सहयोग किया और टंकारा ट्रस्ट को भी आपने संभाला सम्मेलनों में पिता जी की तरह ही तन-मन-धन से अपने युवा साथियों की पूरी टीम बनाकर सफल आयोजन करते हैं यह वेद के वाक्य को जीवन में चरितार्थ कर रहे हैं। अब आप अनुमान लगा सकते हैं कि सहगल जी ने तैयारी के लिए कितना समय परिवार को दिया होगा और आप अत्यन्त प्रसन्न होंगे इनके पौत्र भी अनुवर्ती होकर महर्षि दयानन्द जी के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए संकल्पित हैं। आज इनसे प्रेरणा लेकर ''अनुव्रत पितुः पुत्रो'' पुत्र पिता के अनुव्रती हो को सार्थक करने के लिए आज से ही पुरूषार्थ प्रारम्भ करना है वर्ष में कई बार टंकारा जाकर यहां की व्यवस्था को देखना धन की पूर्ति करना एवं सम्मेलन स्मारिका जैसे कार्यो को समय पर सुव्यवस्थित पूरा करना यह पिता श्री की संयोजन शैली से ही अभिमन्यु की तरह चक्रव्यूह का युद्ध सीखा है आप सभी का स्नेह मिलेगा तो यह आर्य होनहार युवक आर्य समाज के देदीप्यमान नक्षत्र की तरह अपनी विशेष पहचान बनायेंगे प्रभो इन्हें सद्बुद्धि सामर्थ्य प्रदान करें।

संचालक
गुरूकुल पूठ,
गढ़मुक्तेश्वर- हापुड़
मंत्री-आर्य प्रतिनिधि सभा,
उ.प्र. लखनऊ
मो.९८३७४०२९६२

आर्य समाज रामगढ़ मीरजापुर का उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज रामगढ़ मीरजापुर का १११वाँ वार्षिकोत्सव ऋषि बोधोत्सव पर १६ एवं १७ फरवरी २०१५ को मेला मैदान में मनाया गया। इस अवसर पर प्रातःकाल यज्ञ किया गया जिसमें श्री आशीष सिंह, आनन्द प्रकाश सिंह, राम नाथ सिंह यजमान बने। यज्ञोपरांत लखनऊ से पधारे विमल किशोर आर्य वैदिक प्रवक्ता ने कहा कि महर्षि दयानन्द को इसी दिन सच्चे शिव की प्राप्ति की इच्छा जागृत हुई थी और अंत में सच्चे शिव परम पिता परमेश्वर को पाने के लिए घर त्याग कर गुरूवर विरजानन्द के सान्निध्य में बैठ कर साक्षात्कार किया और सारी मानव जाति को सच्चे शिव की प्राप्ति का मार्ग दिखलाया।

इसके अतिरिक्त बिहार से आई श्रीमती धर्मरक्षिता आर्या, रजौली से जीवन सिंह ने ऋषि दयानन्द के जीवन पर आधारित सुमधुर भजन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. के उप प्रधान श्री बेचन सिंह ने की। कार्यक्रम का कुशल संचालन श्री परीक्षित सिंह ने किया इस अवसर पर मेले में हजारों की संख्या में नर नारियों ने भाग लिया तथा जिले के विभिन्न आर्य समाजों के प्रतिनिधियों ने भी हिस्सा लिया।

ईश्वर की सारी रचना न स्वयं बनी है न बिना बुद्धि के

हरिश्चन्द्र वर्मा वैदिक

बिना बुद्धि और कार्य करण के स्वयं कुछ भी नहीं बन सकता। मैं प्रातः ५ बजे थोड़ा भ्रमण करने जाता हूँ, उस समय मोटर साइकिल, टैक्सी गाड़ी मार्ग में चलते रहते हैं किंतु चालक में एक नियम ज्ञान होने से सब एक दूसरे से बचकर चलते हैं। यदि चालक उसमें न रहें अथवा रिमोट से चलने वाला न रहे तो वे अपने आप नहीं चल सकते, यदि स्वयं वे बिना बुद्धि के चले तो सब एक दूसरे से टकराकर नष्ट हो जावे। इन उदाहरणों से यह सिद्ध हो जाता है कि सृष्टि को रचयिता विधाता ने सृष्टि में जो विधान बना दिया है उनके कार्य उसी के अनुसार होते हैं।

आदि सृष्टि के पूर्व, सृष्टि के सारे कण अलग अलग थे। उस समय सारे विश्व कोहरा से अंधकारमय था। उस समय परमात्मा के प्राण प्रकाश के बिना कोई भी परमाणु अपने आप हिल नहीं सकता था। जब उस ब्रह्म के सामर्थ से अन्य परमाणुओं को द्रव्यमान बनाने वाला विशेष कण की उत्पत्ति हो गई तो सृष्टि रचने की विद्या और नियम उनसे सबको प्राप्त होने लगे।

सूर्य अग्नि की उत्पत्ति हुई वैसे जिस प्रकार सृष्टि की आदि में आत्मा और प्राण के संयोग से गर्भ में वैश्वानर अग्नि की उत्पत्ति हुई उसी प्रकार ब्रह्म परमेश्वर से सत के परमाणु मिलकर हिरण्यगर्भ में उत्पन्न होकर तेजवाले तीव्र ज्योति बनकर सूर्य (उस समय पृथ्वी के बाद चन्द्रादि लोक बन रहे थे) अन्तरिक्ष से (डिस्कवरी साइंस चैनल पर दिखाया गया कि अरबो वर्ष पहले) अन्तरिक्ष से आ रहा था। फिर जैसे कोई (पृथ्वी से १५ करोड़ किलोमीटर की दूरी पर) उसे रोक दे वह वहीं रूक गया। पुनश्च सृष्टि के पूर्व जब इस सौर जगत में सूर्यादि लोक नहीं था तो उस समय अन्धकार से आवृत सब कोहरामय था। क्या विज्ञान बता सकता है किउस समय कौन सी ऐसी विद्या थी और किसके द्वारा तेजाग्नि उत्पत्ति हुई? जैसे ० शून्य को मान लेने पर दस १० की संख्या बन जाती है वैसे ही ईश्वर को मान लेने से वह विद्या उसी ने उत्पन्न की और उसी विद्या विज्ञान के दाता विधाता से जब सत् में ऋतु की क्रिया उत्पन्न हुई तब हिरण्यगर्भ में तेज उत्पन्न होकर उसकी ज्योति फैलने लगी जो सूर्य रूप में सविता से अस्तित्व में प्रकट हुआ।

ब्रह्माण्ड में जितने लोक लोकान्तर बने है सब सत रज और तम के अणुओं से बने हैं क्योंकि जब उल्का पृथ्वी पर गिरते हैं तो उन्हें तोड़ने से ज्ञात होता है कि उनका गठन सूक्ष्मसिकता से हुआ है।

लोक निर्माण- रज और तम अणुओं के योग से गुरू अधो भाग रूपी शक्ल से अंधकारयुक्त पृथ्वी एवं चन्द्रादि लोक तथा सतोमय अणुओं से लघु प्रकाश युक्त उपरी भाग से प्रकाशमय लोक बनें। सत्वभाग लघु होने से सदा ऊपर बना रहता है।

भूमि की प्राथमिकता- मनु. १,१३ के अनुसार 'हिरणाय' के दो शक्लों से दिव और भूमि का निर्माण हुआ। तदनुसार भूमि बनने के साथ ही दिव के सूर्य लोक सविता से अस्तित्व में आये पश्चात सूर्य का स्वतंत्र अस्तित्व स्थिर हुआ।

भूमि के विषय में (शतपथ ब्रा. में लिखा है इममु (भूमिः) वा एषां लोकानां प्रथम सृज्यता (६-५-३-१) अर्थात् यह भूमि इन लोकों में प्रथम उत्पन्न हुई। दैवी सृष्टि में भूः व्याहृति की उत्पत्ति के समय ही भूमि बनी थी- स भूरिति व्याहरत, स भूमि सृजता (तै. ब्रा.२,२,४,२) इसी भाव को जैमिनी ब्राह्मण ने भी स्पष्ट किया है। प्रजापतिर्यदग्ने व्याहरत्स भूरित्येव व्याहरत्। स इमाम् असृजत्। (१-१०)

हिरण्यगर्भ उसे कहते है जिसमें सूर्यादि तेज वाले लोक उत्पन्न होके जिसके आधार रहते हैं। उसी से दो भाग शक्लों तमोमय और सतोमय उत्पन्न हुये जिनके एक शक्लों से दिव के ऊपरी भाग से सूर्य जैसे प्रकाश वाले लोक और अधोभाग से तमोमय शक्लो से अप्रकाश वाले सर्वप्रथम पृथिवी की उत्पत्ति हुई, उसके पश्चात चन्द्र एवं अन्य लोक उत्पन्न हुए।

वैदिक ग्रंथों के अनुसार इन लोकों में भूमि सर्वप्रथम उत्पन्न हुई। इसका प्रमाण प्रत्यक्ष है, अरबों वर्ष पहले से यही जीवन उपयोगी तत्वों से पूर्ण हुई। सागर, नदियां, वनस्पति से यही भूमि उत्पन्न हुई और इसके वायु में नाइट्रोजन तत्व की मात्रा ७८. ०३ भाग होने से ही उनके अणुओं और आत्मा के संयोग से शरीर धारी प्राणियों की उत्पत्ति हुई। इस प्रकार इसी विश्व को विश्वकर्मा ने सत्यम् शिवम् और सुन्दरम् बनाया।

ज्ञानेश्वर ने इसी वायु को प्राणप्रद बनाया। इसी वायु के सप्त स्तरों से सूर्य की किरण छनकर धरती के वनस्पति एवं प्राणियों को ऊर्जा एवं रंग प्रदान करता रहता है। इसी वायु के सूक्ष्म कण तरंगों के माध्यम से इलेक्ट्रीक मशीनों 'वायुदूत' द्वारा सब देश विदेश के लोग वार्तालाप करते रहते हैं।

'श्रुति हवन' हमारी प्रार्थनाओं को सुनने और दूसरों तक पहुँचाने में भी वायु समर्थ है। इस मंत्र का अर्थ करते हुए ऋषि दयानन्द ने लिखा है- जीवो वायु निमित्त नैव शब्दानामुच्चारणं च कर्तुश्क्नोति।'' अर्थात् जीवात्मा वायु के द्वारा ही शब्दों का उच्चारण श्रवण करने में समर्थ होता है।

ऋषि के इस अलौकिक अर्थ को पढ़कर लोग इसको एक कल्पना समझते थे, लेकिन आज विज्ञान के आविष्कारों ने इसकी सत्यता को सिद्ध करके दिखला दिया है और हमको अनुभव हुआ है कि ऋषि दयानन्द की दिव्य दृष्टि कितनी दूर तक पहुँच सकती थी।

इसी वायु से प्राणियों को प्राण-आक्सीजन प्राप्त होता रहता है। परमात्मा ने सर्वप्रथम अपने विज्ञान के अनुसार पंचतत्व एवं उसके बाद वनस्पतियों- भोक्ता के पहले भोग्य पदार्थो को इसलिए उत्पन्न कर दिया कि उनसे प्राणियों को शुद्ध आक्सीजन प्राप्त हो सके और प्राणी कार्बनडाइ आक्साइड छोड़ते है उनसे वनस्पतियों को खुराक मिल सके। परमात्मा ने अपने कार्य-करण के नियमों द्वारा मानव शरीर में ज्ञानेन्द्रियां कर्मेन्द्रियां एवं उसके अन्दरूनी उपकरणों कोस एवं करोड़ों स्नायु मण्डलों का गठन बड़ी सूझ बूझ से किया है। इस प्रकार सृष्टि की आदि में ऐसा सांचा बना दिया ताकि उसी के अनुसार उसमें ढल ढल कर स्त्री पुरूष का सर्वांग उनके रज वीर्य से भ्रूण में तथा मन और बुद्धि आत्मा के योग से उत्पन्न होता रहे और कर्मानुसार उनकी शिक्षा दीक्षा से गुण और संस्कार भी बनता रहे।

१८वीं शताब्दी में कोई नहीं जानता था कि कम्प्यूटर क्या चीज है (वह कैसे बनेगा) उसी प्रकार आदि सृष्टि के पूर्व कोई नहीं जानता था कि किन किन तत्वों का पहले निर्माण होगा, किंतु जैसे कम्प्यूटर का पदार्थ ज्ञान ब्राहाण्ड में विद्यमान था वैसे ही विज्ञान का गुरू सर्वज्ञ, सर्वव्यापक ईश्वर को ज्ञात था कि कौन तत्व को कैसे किसी विधि से निर्माण करना है। उसमें समस्त विद्या विद्यमान था। इसलिये पंचतत्व बनने से पूर्व उसके पांच सूक्ष्म भूतों को निर्माण हुआ। परमात्मा ने विचार कर लिया की पांच सूक्ष्म भूतों का निर्माण से पांच ज्ञानेन्द्रियां बनेंगी और जब उससे पांच महाभूतों का निर्माण होगा तब उनसे पांच प्राण से पांच कर्मेन्द्रियों के अंग बनेंगे और मन तथा बुद्धि आत्मा के संयोग से उत्पन्न होगा।

अब पांच सूक्ष्म भूतों यथा- शब्द, रूप, स्पर्श, रस और गंध के अनुसार पांच ज्ञानेन्द्रियों का निर्माण कैसे हुआ? देखिये- (अणु परमाणुओं के उपादानों से पूर्ण) अन्तरिक्ष में शब्द का गुण है उसे सुनने के लिए कान का निर्माण हुआ (कानों से शब्द सुनाई देता है) २. सूर्य- अग्नि के रूप का गुण है उसे देखने के लिए आंखों का निर्माण हुआ। ३. वायु में स्पर्श का गुण है उसे जानने के लिए त्वचा का निर्माण हुआ। ४- जल में रस का गुण है अनेक प्रकार के रस चखने के लिए जिह्वा का निर्माण हुआ ५. भूमि में गंध का गुण है उसके लिये नासिका का निर्माण हुआ जितने प्रकार के गंध सुगंध है भूमि से उत्पन्न होते हैं।

इस प्रकार तत्वों के गुणानुसार ज्ञानेन्द्रियों की रचना आत्मा के भोग के लिए बनाया गया। यह सारी ईश्वरीय सृष्टि गणितीय के अनुसार सत्य पर आधारित स्वाभाविक होती है। किंतु क्षितिज के पार अन्य लोक में जाने के लिए गुरूत्वाकर्षण शक्ति को अति स्वाभाविक तीव्रगति से यान को भेद करना होता है तभी वह गति के अनुसार दूसरे लोक में पहुँच सकता है। अतः कोई भी सृष्टि निष्प्रयोज्य नहीं है। उस बल ने अपने विराट रूप के अनुसार ही इस मानव विप्र की रचना की है।

मूर्तिपूजा की निस्सारता : एक हास्य कथा

प्रस्तुति-श्री भवानी लाल भारतीय

राजस्थान के ग्राम की बात है एक अग्रवाल वैश्य पुत्रहीन था। उसे किसी ने कहा कि भैरव जी को भैंसा भेंट करो अर्थात् उसकी बलि दो। भैरव प्रसन्न होकर तुम्हें पुत्र देंगे। सौभाग्य से उसे पुत्र प्राप्ति हो गयी। अब भैरव को उसकी भेंट (भैंसे की बलि) कैसे दें, अहिंसक वैश्य, उसने एक तरकीब सोची। एक भैसा खरीदा और मोटे रस्से से बांध कर भैरव मूर्ति के पास लाया। उसे प्रस्तर की भैरव की मूर्ति से बांधा और बोला- भैरव बाबा मैं तो अहिंसक बनिया हूँ, आप की बलि प्रस्तुत है, यथा इच्छा इसका उपयोग करें। वह तो चला गया और भैंसे ने अपने को बंधन से छुटाने के लिए जोर लगाया तो रस्से से बंधी मूर्ति उखड़ गयी। भैंसा उसे लिए लिए भागा। आगे आगे भैंसा पीछे रस्से से बंधे भैरव। गांव के सीमान्त पार देवी अपने गढ़ में बैठी, उसने यह दृश्य देखा तो बोली, अरे! भैरव यह क्या हाल है, ''भैंसा तुम्हें खींचे लिए जा रहा है''। भैरव क्षुब्ध होकर बोले- ''गढ़ में बैठी मटका करे आंखे मटकाती है अग्रवाल को बेटा देती तो तेरा भी यही हाल होता।

३१५, शंकर कालोनी,
श्री गंगानगर।

सत्यमेव जयते

-हितेश कुमार शर्मा

एक सत्य को बहुत दिनों से खोज रहा हूँ। भारतीय संविधान में लिखा है, सरकार जनता की, जनता द्वारा और जनता के लिए होगी। इसमें कितना सच है और पिछले ६७ वर्ष से संविधान की यह उक्ति कितनी सच हुई है, इसे ढूँढ रहा हूँ किन्तु मिल नहीं रही। वर्तमान में दल विशेष की सरकार बनती है, दल विशेष के द्वारा बनती है और दल विशेष के लिए बनती है। लोकतंत्र में जनता को कोई स्थान नहीं है। राजनीतिक दल इतने हावी हो गए हैं और इनके कर्ता-धर्ता एक-दूसरे को सन्तुष्ट करने में इतने व्यस्त रहते हैं कि उनका ध्यान जनता की ओर जाता ही नहीं। कहीं मुख्यमंत्री बनाया जाएगा तो जिस जिस दल विशेष का वर्चस्व होगा वह पुराने से पुराने दल के सहयोगी को ढूँढकर लाएगा। भले ही वह विधायक न हो भले ही वह सभांसद न हो किन्तु उसे सत्तासीन कर दिया जाएगा। भले ही वह विधायक न हो भले ही वह सांसद न हो किन्तु उसे सत्तासीन कर दिया जाएगा। किसी आयोग का गठन होगा तो उसमें सत्तासीन दल का व्यक्ति ही अब तक सुशोभित होता आया है और आगे भी होगा। कहीं राज्यपाल नियुक्त होना है तो तथाकथित रूप से किसी दल से सम्बन्धित नहीं होना चाहिए। क्योंकि यह एक संवैधानिक पद है किन्तु इस पद के लिए भी केन्द्र में सत्तासीन दल ऐसे अपने दल के व्यक्ति को ढूँढकर लाएंगे जो कई बार सांसद रह चुका हो, कई बार विधायक रह चुका हो और अब किसी कारण से चुनाव न जीत पाया हो या टिकट न मिला हो उसे राज्यपाल बना दिया जाएगा। यानी इस संवैधानिक पद पर भी जनता का कोई अधिकार नहीं है, जनता के लिए कोई अवसर नहीं है, यह पद भी सत्तासीन दल की बपौती है। अभी उत्तर प्रदेश में महामहिम की नियुक्ति की गई क्योंकि महामहिम स्वयं को कुर्सी पर बैठते ही भगवान राम का अवतार समझने लगे। अतः उन्होंने उत्तर प्रदेश में सत्तासीन दल के मुखिया को हनुमान की उपाधि से अलंकृत कर दिया। भगवान श्री हनुमान का इससे बड़ा अपमान कथाकथित श्रीराम नहीं कर सकते थे। दुख हुआ होगा भगवान राम को यह सब जानकर हनुमान जी भले ही क्रोधित न हों, लेकिन भगवान राम अवश्य ही उस दल विशेष पर अपनी कृपा नहीं करेंगे, जिस दल विशेष ने अपने दल के एक बैठे ठाले व्यक्ति को महामहिम के पद पर सुशोभित किया है। इसीप्रकार कुलपति की नियुक्ति होती है। प्रत्येक पद जो केन्द्र में सत्तासीन सरकार के अधीन होता है उस पर सत्तासीन दल विशेष का ही अधिकार होता है जनता का कोई हक नहीं हैं। मैं भी नाहक ही यह बिंदु उठा रहा हूँ लेकिन जब दम घुटने लगता है तब उस भाव को कागज पर उकेरने से मन हल्का हो जाता है। कहीं राजदूत की नियुक्ति हो तो दल विशेष का व्यक्ति ही राजदूत बनना चाहिए। कहने की बात है कि अपने निकटस्थ व्यक्तियों को मंत्रीगण अपने स्टाफ में न रखे। एक परिवार का एक व्यक्ति ही राजनीति में सर्वोच्च पदासीन होना चाहिए। मंत्रीगण अपने पुत्रों को आगे न बढ़ाये।यह सब सुनने और पढ़ने में अच्छा लगता है किंतु क्रियात्मकता में नहीं आता। संविधान भले ही विद्यार्थियों को, शोधार्थियों को, कानूनविदों को यह पढ़ने के लिए विवश करता रहे कि सरकार जनता की जनता के द्वारा जनता के लिए है किंतु वास्तविकता में ऐसा नहीं है। सरकार दल विशेष की, दल विशेष के लिए और दल विशेष के द्वारा होती है। और कहीं कहीं पर यह दल विशेष वंशवाद को भी बढावा देता है। सत्ता पर एक ही वंश का शासन चलता रहता है जैसा कश्मीर में आजादी के बाद से चल रहा है।जनता को आज तक काश्मीर में अवसर नहीं मिला। एक ही वंश का शासन वहां पर व्याप्त है। संविधान में आमूल चूल परिवर्तन होना चाहिए कि राज्यपाल जैसे पद पर दल विशेष का व्यक्ति नहीं बैठेगा। एक ही वंश का शासन दो सत्र से अधिक नहीं चलेगा। कोई भी व्यक्ति चार बार से अधिक मंत्री, सांसद या विधायक पद के योग्य नहीं समझा जायेगा। लेकिन अपने ही खिलाफ कानून कौन बनायेगा। स्पष्ट है कि मेरी साफगोई पर मुझे ही निशाना बनाया जा सकता है, जनतांत्रिक कानून नहीं बनाया जा सकता।

प्रधानमंत्री जी ने बहुत बड़ा प्रीतिभोज दीपावली की खुशी में दिया उसमें निमंत्रित लोगों के जो नाम लिए गये उनमें किसी साहित्यकार का नाम नहीं था किसी बुद्धिजीवी का नाम नहीं था नाम था श्री सलमान खान का, जिन पर फुटपाथ पर सोए व्यक्तियों को कुचलने और उनकी मृत्यु का मुकदमा चल रहा है इसीप्रकार श्री शशि थरूर को भी निमंत्रित किया गया, जो अपनी पत्नी की मृत्यु के संदर्भ में संदिग्ध माने जा रहे है। प्रधानमंत्री जी ने जिन व्यक्तियों के नाम निमंत्रण के संदर्भ में टी.वी.में लिए उनमें किसी साहित्यकार का नाम सुनाई नहीं पड़ा, हो सकता है साहित्यकारों को भी बुलाया गया हो लेकिन उनके नाम सुनने में नहीं आये। साहित्यकारों की वर्तमान समय में जो उपेक्षा हो रही है वह कभी नहीं हुई। बहुत समय से कोई राष्ट्रकवि भी नियुक्त नहीं हुआ है पहले इस पद पर स्व. श्री रामधारी सिंह दिनकर रहे और उनके बाद स्व. श्री मैथिली शरण गुप्त जी रहे। वर्तमान में मेरी जानकारी के अनुसार कोई राष्ट्रकवि नहीं है मंच पर भी कोई राष्ट्र संबंधी कविताओं का श्रवण करना पसन्द नहीं करता। मंच पर मादक और सौंदर्य प्रमुख गीतों का श्रवण अच्छा लगता है। मदिरा का सेवन करके झूम झूम कर जो मादक गीतों को सुनाते है जो मदिरा पर शायरी करते हैं। उनको महान साहित्यकार की उपाधि दी जाती है भले ही साहित्य के नाम पर उन्होंने कुछ विशेष न लिखा हो सिवाय चन्द कविताओं के जो मंच से सुनाकर वाहवाही लूटते हैं। कविता ही केवल साहित्य नहीं है साहित्य बहुत कुछ है साहित्य काल पात्र की बेल की तरह होता है जिसमें साहित्यकार समसामयिक लेखों में उन घटनाओं को लिपिबद्ध करता है जो वह देखता और सुनता है। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के बारे में श्री राधेश्याम योगी जी का एक लेख पढ़ा। पढ़कर आश्चर्य नहीं हुआ। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने जिन तथाकथित साहित्यकारों को बड़ी बड़ी उपाधियाँ और लाखों रूपये प्रदान किए वह किसी न किसी रूप में या तो संस्थान से सम्बद्ध रहे या उततर प्रदेश में सत्तासीन दल के मुखिया के निकटस्थ रहे हैं। पूरा पक्षपात किया गया है। संभवतः किसी ने उच्च न्यायपालिका में इस संबंध में गुहार भी लगाई हो, किंतु क्या होता है? जिसकी लाठी उसकी भैंस की कहावत आज भी प्रचलित है। महान साहित्यकार सम्मान से वंचित रह जाते हैं। जो वास्तव में साहित्यकार है और खुशामदी तथा अवसरवादी और सत्ता के निकटस्थ व्यक्ति साल दर साल सम्मानित होते रहते हैं। जितनी भी साहित्यिक संस्थायें है जो साहित्यकारों के नाम पर व्यक्तियों को सम्मानित करती है वो पहुँच पूछ पर विश्वास रखती है यदि आप इस संदर्भ में इतिहास को टटोल कर देखें तो अधिकतर कुलपति अथवा भारतीय सेवा के पूर्व प्रशासनिक अधिकारी ही सम्मानित होते हैं। अथवा वह सम्मानित होते हैं जो सत्तासीन दल के करीब होते हैं। एक तथ्य और है कभी कभी वोट भी इन सम्मानों का आधार बनता है, आप सत्तासीन दल को कितने वोट दिला सकते हैं, आपके प्रशंसक कितने है और क्या आप सत्तासीन दल के लिए वोट बैंक सिद्ध हो सकते हैं। इस पर भी आपका सम्मानित होना सुनिश्चित करता है। राज्य सरकार से अनुदान भी इस वोट बैंक के आधार पर ही मिलता है। तुष्टीकरण यहां भी चलता है। प्रबुद्ध साहित्यकार वंचित रह जाते हैं और चाटुकार सिंचित होते है। यह प्रजातंत्र है जिसमें प्रजा को मूर्ख बनाने वाला ही सफल शासक बन सकता है। यह एक सार्वभौम सिद्धान्त है, जिसमें परिवर्तन संभव नहीं है। क्योंकि अंधा बांटे रेवड़ी अपने अपनों को दे। वाली बात मिटी नहीं है।

भारत की न्यायपालिका पर आंख बन्द कर जनता भरोसा करती है। भले की मुकदमें के दौरान मुद्दई-मुद्दालेह मर जायें किंतु न्यायपालिका पर अविश्वास नहीं होता। न्यायपालिका जो करती है वह सही है अधिवक्तागण को प्रशिक्षण के दौरान प्रथम ज्ञान यह दिया जाता है कि न्याय की कुर्सी सदैव सही निर्णय देती है (दी चेयर इज आलवेज राइट) और यही सिद्धान्त चलता रहता है। जो बेहद होशियार लोग होते हैं वह इसका लाभ उठाते हैं येन-केन प्रकारेण मुकदमें को इतना लंबा खींचते हैं कि साक्ष्य मिट जायें और साक्षी मर जायें ताकि वह आरोपमुक्त हो सकें। श्री सलमान खान का मुकदमा १२ साल से भी अधिक समय से चल रहा है कई साक्षी मर चुके हैं कई ने अपना बयान बदल दिया है । मुकदमा और कितने साल चलेगा संदेह है कि इतने साल तक मुकदमा चलेगा जितने साल तक परिस्थितियां श्री सलमान खान के पक्ष में नहीं हो जाती और वह बरी नहीं हो जाते। श्री लालू यादव का मुकदमा इससे भी अधिक पुराना है और मजाक देखिये ६० करोड़ के घोटाले का फैसला दोष सिद्ध हो जाने पर केवल कुछ लाख रूपये जुर्माना और संभवतः ५ साल की सजा सुनाकर निस्तारित कर दिया गया। घोटाला ६० करोड़ का यानी ६० करोड़ भी वसूल करने का प्राविधान नहीं किया गया। लाभ का धंधा है, करोड़ो का घोटाला करो और येन केन प्रकारेण साम, दाम, दण्ड, भेद के आधार पर कुछ लाख का जुर्माना लग जाए और ५ साल की सजा हो जाये तो क्या नुकसान है। हत्याकाण्ड, तेजाबकाण्ड, अपहरण का मुलजिम जमानत पर बाहर आ जाता है और बाहर आकर पीडित को धमकाता है, गवाहों को बयान बदलने के लिए मजबूर करता है मिलावट करके मिठाई में जहर बेचने वाला बहुत कम पकड़ा जाता है क्योंकि किसी न किसी स्तर पर उसे संदेह का लाभ मिल जाता है। आदरणीय जयललिता जी को आय से अधिक सम्पत्ति के मामले में दोषी ठहराया गया, जुर्माना भी हुआ और सजा भी हुई, जुर्माना किस आधार पर इतना अधिक किया गया। आय से अधिक सम्पत्ति के अनुपात में जुर्माना करना सर्वथा उचित था जो नियम आदरणीय लालू यादव के मामले में भी अपनाया जाना चाहिए। वर्तमान में कोई भी मुकदमा चाहे वह सम्पत्ति का हो अथवा हत्या का हो अथवा अपहरण का हो लम्बा चलता है। बरसों लग जाते हैं और अन्तोगत्वा संदेह का लाभ प्राप्त करके अथवा गवाहों को अपने पक्ष में करके सिद्धहस्त आरोपी बच जाता है। यदि मुकदमें शीघ्र निस्तारित हो तो न्याय आसानी से हो सकता है और सस्ता तथा सुलभ हो सकता है। उच्च न्यायालयों में और अधीनस्थ न्यायालयों में और सम्भवतः सर्वोच्च न्यायालय में भी पीठासीन न्यायिक अधिकारियों के स्थान रिक्त है। इनको भरा क्यों नहीं जा रहा है। इसके पीछे क्या कारण है क्या हमारे प्रधानमंत्री न्यायपालिका में कोई ऐसा दखल दे सकते हैं कि रिक्त पदों पर तुरंत नियुक्ति की जाये। क्या न्यायपालिका में सर्वोच्च पद पर आसीन व्यक्ति में सी न्यायिक मानवतापूर्ण भावना जागृत हो सकती है जो मुकदमें के शीघ्र निस्तारण हेतु सर्वप्रथम तो रिक्त स्थानों पर नियुक्ति करें और द्वितीय मुकदमें के निस्तारण का समय सुनिश्चित करें। मैं सुविधाशुल्क की बात नहीं करता क्योंकि संभवतः न्यायपालिका में कोई ऐसा उद्धहरण मेरी जानकारी में नही है जिसमें सुविधाशुल्क की बात आई हो, किंतु आरोपियों को जो सुविधा मुकदमें को लंबित रखने के कारण मिल जाती है वह न्यायपालिका को बाधित करती है। पीड़ित के साथ अन्याय होता है और आरोपी पुनः आरोप करने की स्थिति में आ जाता है। गैंगरेप क्यों नहीं रूक रहे। क्योंकि गैंगरेप के मुकदमें साल दर साल चलते हैं, आरोपी को जमानत भी मिल जाती है और कभी कभी संदेह का लाभ भी मिल जाता है। मेरा दावा है कि अगर गैंगरेप के आरोपियों को जमानत देने का प्राविधान समाप्त कर दिया जाये और मुकदमें का निस्तारण अधिक से अधिक ६ माह में कर दिया तो गैंगरेप, सामूहिक बलात्कार रूक सकते हैं। अन्यथा देश तो चल ही रहा है, न्याय भी हो रहा है। यह तो मशीन है जो कभी रूकती नहीं । यह तो काल है जो कभी चुकता नहीं और सत्ता का अहम है जो कभी झुकता नहीं।

गणपति भवन, सिविल लाइंस, बिजनौर

आर्ष स्वाध्याय आत्मा का भोजन मानव निर्माण की परमौषधि है

पं. उम्मेद सिंह विशारद
९४११५१२०१६

(स्वाध्याये नित्य युक्तः स्यादेव चैवेह कर्मणा)

अर्थात् स्वाध्याय और शुभ कर्मो में मनुष्य सदा तत्पर रहे। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने अमर ग्रंथों में स्वाध्याय पर बड़ा बल दिया है वह कहते है कि स्वध्याय से मात्र बुद्धि बल ही नहीं बढ़ता अपितु आत्मबल की वृद्धि की अन्तः प्रेरणा भी प्राप्त होती है। आस्थाओं के अभिवर्धन एवं दृढ़ीकरण के लिए स्वाध्याय अनिवार्य है।

मानव जीवन को सुखी और सुसंस्कारी बनाने के लिए सद्ग्रंथों का स्वाध्याय करना अत्यन्त आवश्यक है। स्वाध्याय मानव जीवन का सच्चा सुहृदय एवं आत्मा का भोजन है। स्वाध्याय से हमें जीवन को आदर्श बनाने की सत्प्रेरणा मिलती है। स्वाध्याय हमारे जीवन विषयक सारी समस्याओं की कुंजी है। स्वाध्याय हमारे चरित्र निर्माण में सहायक बन कर हमें प्रभु प्राप्ति की ओर अग्रसर करता है। स्वाध्याय स्वर्ग का द्वार (सुख विशेष) और मुक्ति का सोपान है।

स्वाध्यायाद् योगमासीत योगात स्वाध्यायमामनेत-।
स्वाध्याय योग सम्पत्या परमात्मा प्रकाशते। (योग शास्त्र)
अर्थात्-स्वाध्याय से योग की उपासना करे और योग से स्वाध्याय का अभ्यास करें। स्वाध्याय की सम्पति से परमात्मा का साक्षात्कार होता है।
गीता में भी कहा गया है- स्वाध्यायभ्यसनं चैव वांगमय तप उच्यते।
अर्थात-स्वाध्याय करना ही प्राणी का तप है।
स्वाध्याय नित्य युक्त स्यादेव चैवेह कमर्णा। (मनु)
अर्थात्-स्वाध्याय और शुभ कर्म में सदा तत्पर है।
नित्यं स्वाध्यायशीलश्च दुर्गार्यान्ति तरन्ति ते- (शान्ति पर्व)
अर्थात-नित्य स्वाध्याय करने वाला व्यक्ति दुखों से पार हो जाता है।
जिज्ञासा जगाइये और अपना ज्ञान भण्डार भरिये-
जिज्ञासा में स्वयं अपनी एक ज्ञान शक्ति होती है। ज्यों ज्यों जिज्ञासा गहरी होती जाती है। ज्ञान भी बढ़ता जाता है, मनुष्य की जिज्ञासु वृत्ति ने ही उसे दार्शनिक आध्यात्मिक वैज्ञानिक और अन्वेषक बनाया है।
समाधान स्वाध्याय से-
जिज्ञासाओं के समाधान का सबसे उपयुक्त माध्यम स्वाध्याय माना गया है।
स्वाध्याय योग युक्तात्मा परमात्मा प्रकाशते- (महर्षि व्यास)
अर्थात- स्वाध्याय युक्त साधना से ही परमात्मा का साक्षात्कार होता है।
स्वाध्याय का मूल प्रयोजन आत्मा का शिक्षण
शास्त्रों की तीन आज्ञायें है- सत्यम वद-धर्मचरं-स्वाध्याया मा प्रमदः
अर्थात् - सत्य ही बोलें, धर्माचरण करें और स्वाध्याय से प्रमाद न करें।
स्वाध्याय - महापुरूष ढालने का स्टील प्लान्ट
महर्षि दयानन्द कहते हैं कि हमारे सारे संकट और दुख मात्र का कारण है कि हम अपने बारे में नहीं जानते। ज्ञान की उपासना मानवता की सेवा है। इसके लिए स्वाध्याय का आश्रय लेना अनिवार्य है। महापुरूष स्वाध्याय से ही बनते हैं। यह भी सत्य है कि महापुरूष सदैव बने नहीं रहते किंतु विचारों और पुस्तकों के रूप में उनकी आत्मा इस धरती पर चिरकाल तक बनी रहती है।
स्वाध्याय की उपेक्षा न करें
आत्मिक ज्ञान सिद्ध करने में बुद्धि ही आवश्यक तत्व है। इसके संशोधन संवर्द्धन एवं परिमार्जन के लिए विचार को ठीक दिशा में प्रचलित करना होगा।
उत्तम पुस्तकें जागृत देवता है
आर्ष ग्रंथों का नित्य स्वाध्याय से मनुष्य में देवत्व आता है।
स्वाध्याय का आधार मनन- चिन्तन-
अपने विचारों, व्यवहार एवं नित्य क्रिया का मनन आवश्यक है।
स्वाध्याय जीवन को परिपूर्ण बनाता है-
आर्ष ग्रंथों को पढ़ने की आदत मनुष्य की जन्मजात योग्यता के विकास में सहायक होती है।
स्वाध्याय से विद्या की सम्पति बढ़ाते चले-
आओ हम भी अपनी शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करें। अब हम धर्मानुष्ठान करेंगे अधिक से अधिक पढ़ेंगे।
स्वाध्याय जीवन को विकसित उच्च और पवित्र बनाने का साधन है
सत्संग की पूर्ति स्वाध्याय है- अच्छी पुस्तकें सच्चे मित्र है।
अपने घर में आर्ष साहित्य का पुस्तकालय बनाइये - ज्ञान देवता का मंदिर हो।
सर्वोत्कृष्ट परमार्थ- ज्ञान यज्ञ - सत शास्त्रों का अध्ययन आत्मा का उत्थान सच्ची सम्पदा ज्ञान का भण्डार है। आत्म ज्ञान का सबसे बडा ज्ञान
आत्मनिवेदन- हमें एक और बात ध्यान में रखनी चाहिए कि पुस्तकें हमारे कमरे को सजाने वा प्रदर्शनी लगाने के लिए न खरीदी जाये वरन् उनका नियमित स्वाध्याय जीवन के अन्य कार्यक्रमों की तरह आवश्यक अंग बना लेना चाहिए। दैनिक दिनचर्या में कम से कम एक घंटा तो आर्ष ग्रंथों का स्वाध्याय अवश्य करना चाहिए। देखने में आ रहा है कि आर्य जगत में अधिकांश आर्य जन स्वाध्याय को अनिवार्य दिनचर्या नहीं बना रहे हैं परिणाम स्वरूप आर्ष सिद्धान्तों का अज्ञान पुरूषार्थ व पूरा क्रम का अभाव के कारण परस्पर ईर्ष्या द्वेष व आर्य समाज के विकास के लिए प्रयत्नशील न होना आदि है।

आइये हम आर्य नित्य जीवन का स्वाध्याय आर्ष ग्रंथों के स्वाध्याय की परम आदत डालें तभी हम कृण्वन्तो विश्वमार्यम बना सकते हैं।
यथा यथा हि पुरूषं शास्त्र समधि गच्छिति।
तथा तथा विज्ञानाति विज्ञान चास्य रोचते।।
अर्थात् जैसे जैसे मनुष्य शास्त्रों का अध्ययन करता है
वैसे वैसे उसकी ज्ञान राशि बढ़ती जाती है।
जैसे सूर्य के उदय होने से कमल रत्न विकसित होता है
स्वाध्याय से बुद्धि का विकास होता है।

वैदिक प्रचारक
गढ़ विकास मोहकमपुर देहरादून

"जन्म से पहले चिता".....

माँ की कोख से कन्या बोली,
सुनो तात ये बानी।
जन्म से पहले चिता बनाते,
क्यों हत्या की ठानी।। बोलो क्यों.....

थार मरूस्थल में वारिस को,
तबा की बूँद बनाई।
जमीं गिरे न बूँद बनाई।
भाप बना के उड़ाई।।

तात आज मेरी छठी इंद्री,
ये आभास दिलाती।
कोख के अन्दर बेटी आये,
मां-बाप पर गाज गिर जाती।।

बेटी के बदले बेटे का,
न वज्रपात हो पाता।
पैदा होते ही खुशियों से,
बैण्ड-वाद्य बजवाता।।

तेरी बेटी, दादा पोती,
नाना, नातिन हूँ मैं।
बहन, भतीजी और भांजी,
बहु किसी की हूँ मैं।।

मेरे मारने के निर्णय की,
आज अकेले ठानी, आज अकेले ठानी।
जन्म से पहले चिता बनाते,
क्यों हत्या की ठानी।। बोलो क्यों.....

धन्य धन्य तुम नारी

लिखी गई हैं नारी तुम पर, लाखों लाख कथायें।
कुछ में लिखी तुम्हारी खुशियां, कुछ में लिखी व्यथायें।।
लेकिन अक्सर मैंने सबमें, तुमको अबला पाया।
ये कैसा अन्याय समझ का, मेरी समझ न आया।।
सच बतलाना क्या तुमको ये, अवलापन भाता है।
आखिर इस कमजोरी का, तुम से ही क्यों नाता है।।
सच बतलाना अबला बन कर, क्यों पीड़ा सहती हो।
कभी विरोध न करती इसका, कभी न कुछ कहती हो।
सुनकर मेरी बात ध्यान से, सहसा नारी बोली,
देखो मुझसे खेल रहे हो, तुम शब्दों की होली।
हूँ नारी मैं लेकिन नर से आधे की अधिकारी,
इस आधे के कारण ही मैं नर को खलती भारी।।

रमेश नागिल
अध्यापक श्री महर्षि दया. सर. जू. हा. स्कूल
कोछाभांवर-तिगैला-झांसी (उ.प्र.)

तथ्यों को छुपाकर मा. सर्वोच्च न्यायालय भारत में योजित स्पेशल लीव अपील सं. २२६०/२०१५ रमाकान्त सारस्वत बनाम् उत्तर प्रदेश सरकार व अन्य पर मा. सर्वोच्च न्यायालय ने अपील को स्वीकार करते हुए उनके द्वारा प्रस्तुत कथन को निरस्त कर स्पेशल लीव अपील को भी दिनांक १६.०३.२०१५ को डिसमिस कर दिया है। आदेश की मूल नैट कापी निम्नांकित है :-

ITEM NO.22 COURT NO.6 SECTION XI

S U P R E M E C O U R T O F I N D I A

RECORD OF PROCEEDINGS

Petition(s) for Special Leave to Appeal (C).....CC No(s). 2290/2015

(Arising out of impugned final judgment and order dated 25/09/2014 in SA No. 269/2013 passed by the High Court Of Judicature at Allahabad, Lucknow Bench)

RAMA KANT SARASWAT **Petitioner(s)**

VERSUS

STATE OF UP AND ORS **Respondent(s)**

(with appln. (s) for permission to file SLP and office report)
Date : 16/03/2015 This petition was called on for hearing today.
CORAM :

HON'BLE MR. JUSTICE J. CHELAMESWAR
HON'BLE MR. JUSTICE R.K. AGRAWAL

For Petitioner(s) Mr. Rakesh Dwivedi,Sr. Adv.
Mr. Gopal Krishna, Adv.
Ms. S. Pathak, Adv.
Mr. S. K. Verma,Adv.

For Respondent(s) Mr. K.N. Balagopal,Sr. Adv.
Ms. Rachana Srivastava,Adv.

UPON hearing the counsel the Court made the following

O R D E R

Permission to file special leave petition is granted.
Delay condoned.
The special leave petition is dismissed.

(DEEPAK MANSUKHANI)
COURT MASTER
Signature Not Verified
Digitally signed by
Deepak Mansukhani
Date: 2015.03.16
17:49:39 IST
Reason:

(TAPAN KR. CHAKRABORTY)
COURT MASTER

दिनांक १०-१२ मार्च, २०१५ को नई दिल्ली में आयोजित पूसा कृषि विज्ञान मेले में भाग लेने पूसा इंस्टीट्यूट नई दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा पहुंचे

पाषाण की पूजा क्यों?

पूजा करना है तो कर पूज्य की
आशीष ले ले जीवन सुधर जायेगा
निर्जीव पाषाण की पूजा क्यों ? वीरता है?
यह निर्जीव है, भोले इस से क्या पायेगा।।
धर्म तेरा तू अधर्म त्याग दें
धर्म तेरा तू असत्य त्याग दें
मानवीय गुणों से हो जा पूरित
नम्र तू बन अज्ञान त्याग दें।
कर्तव्य तेरा जो बस उसे निभा तू
वांछित फल निश्चित ही पा जायेगा
निर्जीव पाषाण .....
सत्य मार्ग चल, भले हो दुष्कर
निराकार ब्रह्म का दर्शन होगा
जीना सार्थक, अवश्य हो जायेगा
तुझे सत्य ओ३म का अनुभव होगा
आडम्बर है दुर्गुणों की खान
यह अंधकार हे तू भटक जायेगा।
यह निर्जीव पाषाण.....
सजीव निर्जीव का भेद जान ले
सजीव सत्य से तू जोड़ रिश्ता
यह नेत्र खोलता, यही सत्यम् है
एकटक सागर की लहरे निरखो
भेद सत्य, असत्य का जान जाएगा
निर्जीव.....

रचयिता - डा. बी.पी. सागर
अंतरंग सदस्य
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. लखनऊ

स्कूल चलो अभियान रैली निकाली गई

गोण्डा, शिक्षा क्षेत्र रूपइडीहा गोण्डा में ब्लाक स्तरीय स्कूल चलो अभियान की रैली को खण्ड शिक्षाधिकारी रूपईडीहा-श्री रामराज ने हरी झण्डी दिखाकर ब्लाक संसाधन केन्द्र रूपईडीह से रवाना किया। जिसमें ब्लाक के विभिन्न प्राथमिक विद्यालय व उच्च प्राथमिक विद्यालय के बच्चों ने भाग लिया। रैली का नेतृत्व ए.बी.आर.सी. के.के. शुक्ला ने किया।

इस अवसर पर प्राथमिक शिक्षक संघ के अध्यक्ष अवधेश तिवारी, उच्च प्राथमिक संघ के अध्यक्ष अजीत कुमार तिवारी एम.पी.आर.सी. परनावगुलहा आदि ने भाग लिया। रैली पुनः वापस बी.आर.सी. केन्द्र प्रांगण में पहुंचकर सम्पन्न हुई। रैली समापन के उपरांत एक गोष्ठी का आयोजन हुआ जिसमें खण्ड विकास अधिकारी रामराज ने आज प्राथमिक वार्षिक परीक्षा शांतिपूर्वक सम्पन्न होने पर शिक्षकों को धन्यवाद दिया और उद्‌बोधन में कहा कि शिक्षक स्वस्थ समाज की रीढ़ है। शिक्षक और बेहतर शिक्षा देकर बेहतर समाज बनाने में महती भूमिका निभाये।

विनोद कुमार आर्य
गोण्डा

शोक सन्देश

आर्य समाज अमरोहा की श्रीमति अंतरंग सभा अपने मंत्री श्री राजनाथ गोयल के चाचा श्री अभिताभ गुप्ता, पूर्व पुलिस महानिदेशक राजस्थान के आकस्मिक निधन पर अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करती है। साथ ही परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना करती है कि उनको अपने श्री चरणों में स्थान दें और शोक संतप्त परिवार को इस असीम दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

श्रद्धांजलि सभा

डा. अभय श्रोती जी, प्रधान आर्य उप प्रतिनिधि सभा, मुरादाबाद के युवा पुत्र के आकस्मिक निधन हो जाने पर आर्य समाज अमरोहा में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। जिसमें ईश्वर से प्रार्थना करते हुए दिवंगत की आत्मा की सद्‌गति एवं दुखी परिवार के लिए मनःशान्ति एवं धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना की गयी।

आर्य समाज अमरोहा
के पदाधिकारी एवं सदस्यगण

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्सः०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०९४१२६७८५७१, मंत्री-०९८३७४०२१६२, सम्पादक-९५३२७४६६००
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,

.....

.....

.....

प्रवेश सूचना

उत्तर प्रदेश के पूर्वान्चल में स्थित वेद वेदांग विद्यापीठ गुरूकुल आश्रम महर्षि दयानन्द नगर, धनपतिगंज, जिला-सुल्तानपुर में नवीन सत्र २०१५-१६ के लिए अप्रैल के प्रथम सप्ताह से प्रवेश प्रारम्भ हो रहा है। गुरूकुल में न्यूनतम आठ वर्ष के स्वस्थ बालक का ही प्रवेश, प्रवेश परीक्षा के उपरांत सम्भव हो सकेगा। प्रारम्भ से उ. प्र. माध्यमिक संस्कृत शिक्षा परिषद तथा शास्त्री, आचार्य की सम्बद्धता महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय रोहतक से है। इच्छुक अभिभावक तुरन्त सम्पर्क करें। बालक को अनिवार्य रूप से आश्रम में ही निवास करना होगा।

आचार्य ९४५०७८३३३७ | उपाचार्य ९९९५७२०६९१ | प्रबन्धक ८९५३५०२३४५

आर्य समाज यमलार्जुनपुर का शताब्दी समारोह 3 अप्रैल से

आर्य समाज यमलार्जुनपुर कैसरगंज, बहराइच का शताब्दी समारोह का आयोजन ३ से ५ अप्रैल १५ को स्थानीय आर्य समाज के प्रागंण में बड़ें ही हर्षोल्लास के साथ मनाया जायेगा। शताब्दी समारोह में आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र., लखनऊ के प्रधान माननीय श्री देवेन्द्र पाल वर्मा एवं मंत्री आचार्य धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, संरक्षक गुरूकुल पूठ भाग लेंगे। इसके अतिरिक्त विद्वानों में मा. श्री धर्मवीर जी सम्पादक, परोपकारी अजमेर, राजस्थान, श्री अरविन्द शास्त्री, भटिण्डा, पंजाब, विमल किशोर आर्य, वैदिक प्रवक्ता लखनऊ। भजनोपदेशकों में श्री नरदेव विद्यावाचस्पति, भरतपुर, राजस्थान, पं. श्री भूपेन्द्र सिंह, अलीगढ़, स्वामी भगवानदेव, बहराइच पधार रहे हैं। उपरोक्त कार्यक्रम की जानकारी देते हुए श्री सर्वजीत मौर्य, अधिष्ठाता आर्य वीर दल ने बताया कि प्रातः ८ बजे से १० बजे तक यज्ञ उपदेश तथा भजन, १० से १२ बजे तक विद्वानों के व्याख्यान, सायंकाल ५ बजे से ६ बजे तक शंका समाधान तथा ६ बजे से १० बजे तक भजन एवं व्याख्यान तथा ३ अप्रैल को प्रातः १० बजे जन जागरण हेतु एक विशाल प्रभात रैली निकाली जायेगी। शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में एक स्मारिका भी निकाली जायेगी जिसका विमोचन आचार्य धर्मेश्वरानन्द सरस्वती के कर कमलों द्वारा किया जायेगा। इस अवसर पर बहराइच जिला के अतिरिक्त कई अन्य जिलों की आर्य समाजों के प्रतिनिधि भाग लेंगे।

आर्य वीर दल प्रशिक्षण एवं आर्य महासम्मेलन

आर्य उप प्रतिनिधि सभा सम्भल के तत्वावधान में आर्य समाज सम्भल में दिनांक २३ से २६ मार्च २०१५ तक आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर लगाया जा रहा है तथा दिनांक २७ से २६ मार्च तक आर्य महा सम्मेलन भी होगा।।

आर्य महासम्मेलन में तीनों दिन प्रातः ५ से ७ बजे तक योग शोभा यात्रा निकाली जायेगी। २:३० से ५:३० बजे तक धर्म संस्कृति रक्षा सम्मेलन होगा २८ मार्च को प्रातः ६:३० से ११:३० बजे तक वेद सममेलन २ से ५:३० बजे तक राष्ट्र रक्षा सम्मेलन रात्रि ७:३० से १०:३० बजे तक महर्षि दयानन्द और आर्य समाज पर व्याख्यान, २६ मार्च को प्रातः योग और आयुर्वेद पर प्रवचन होंगे। दोपहर १:३० से ५:३० बजे तक आर्यवीर सम्मेलन रात्रि ७:३० से १०:३० बजे तक गौ एवं कृषि सम्मेलन होगा। आर्य मित्र विद्वान स्वामी ब्रह्मानन्द वेदोभेक्षु बरेली . नरेन्द्रवेदालंकार दिल्ली, श्री जगत वर्मा भजनोपदेशक पंजाब, घनश्याम प्रेमी भजनोपदेशक मुजफ्फरनगर, श्री वीरेन्द्र रत्नम् मेरठ, आचार्य जीवन सिंह साधु आश्रम अलीगढ़ श्री हरि सिंह आर्य मुख्य शिक्षक आर्यवीरदल के साथ ही स्थानीय उपदेशक गण।

आर्य समाज औरैया का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज औरैया अपना १०३वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक १२ मार्च २०१५ से १५ मार्च २०१५ तक आर्य समाज मन्दिर दिवियापुर मोड़ औरैया में उल्लासपूर्वक मनाया गया। जिसमें वैदिक विद्वान-सर्वश्री आचार्य उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ यज्ञाचार्य, आगरा, स्वामी प्रभुवेश जी महोपदेशक, श्री मोहित शास्त्री भजनोपदेशक बिजनौर, श्री लोकपाल हरिद्वार, जादूगर सम्राट दिनेश कौशल के उपदेश भजन व आकर्षक कार्यक्रम हुये।

देवेश चन्द्र आर्य
मंत्री

स्वास्थ्य चच

समस्या आपकी–समाधान हमारा

आदरणीय डॉक्टर साहब,

सादर नमस्ते!

समस्या– आर्य मित्र में प्रकाशित मधुमेह की समस्या के समाधान की जानकारी पढ़ने को मिली। मेरी आयु ५० वर्ष है मैं काफी समय से मधुमेह के साथ साथ उच्च रक्तचाप रोग से पीड़ित चल रहा हूँ। मेरी रक्त शर्करा खाली पेट १४० व भोजन के बाद २०० के ऊपर रहती है। बी.पी. भी सामान्यतः १५०/१०० के आस पास ही रहता है बहुत कमजोरी महसूस होती है। अंग्रेजी दवाएं तो ले रहा हूँ किंतु कोई लाभ नहीं हो रहा है। कृपया मेरी समस्या का समाधान करने का कष्ट करें।

कुँवर सिंह आर्य
रोहतक

समाधान– प्रिय श्री कुँवर सिंह जी, आपकी समस्या आजकल बहुतायत से देखी जा रही एक गंभीर समस्या है। आपने अपने कार्य के संबंध में नहीं बताया है यदि आप सेवा में या कोई निजी व्यवसाय कर रहे हैं तो अपनी मानसिक चिंताओं को नियंत्रित करें। हमारे शरीर को ठीक रखने के लिए पांच भौतिक प्राकृतिक पदार्थ, मन को शान्त रखने के लिए सद्विचार व आत्मा को आनन्दित करने हेतु ईश्वर स्तुति प्रार्थना व उपासना की नितान्त आवश्यकता है।

आपकी समस्या एक मनोकायिक समस्या है अर्थात् आपको होने वाले दोनों ही रोगों का प्रारम्भ सामान्यतः मन अशान्ति के कारण ही होता है। कालान्तर में शरीर की क्रिया प्रभावित होकर विकृति उत्पन्न हो जाती है जिससे एक चक्र जैसी स्थिति बन जाती है। इस चक्र को तोड़ने के लिए औषधि के साथ-साथ इन रोगों के कारण मानसिक विकृति (चिंता, भय, ईर्ष्या, द्वेष आदि) को नियंत्रित करना नितान्त आवश्यक है। जिसका एक मात्र उपाय शान्ति प्रकरण के अंतिम शिव संकल्प मंत्रों का अर्थ सहित चिन्तन, मनन व व्यवहार है। अन्यथा कारण के बने रहने पर कार्य घटित होता रहेगा। आशा है आप इस ओर विशेष ध्यान देंगे।

चूँकि आपकी समस्या काफी पुरानी है अतः समाधान में भी समय लगेगा। धैर्य पूर्वक अपने खान-पान, रहन सहन व आचार विचार में परिवर्तन लायें आपको निश्चित लाभ होगा।

अब आपकी आयु ५० वर्ष के ऊपर अर्थात् इक्यावन बावन की होने जा रही है तो अब आप हर प्रकार से बन की ओर प्रस्थान जैसा आचरण करें। अपने भोजन को अधिक से अधिक प्राकृतिक करें, ऋतु में उपलब्ध फल, सब्जी, सलाद का अधिक प्रयोग करें। शर्करा, वसा, कार्बोहाइड्रेट युक्त पदार्थो का कम से कम प्रयोग करें। साधारण नमक के स्थान पर सेंधा नमक का प्रयोग करें। आधुनिक खान पान, रहन सहन आचार विचार से दूर रहने का प्रयत्न करें। एक बार में अधिक भोजन न लें, शारीरिक व्यायाम अवश्य करें। रात को उत्तर दिशा की ओर पैर रखते हुए, गायत्री मंत्र का अर्थ सहित जप करते हुए, समय से सोवें।

जहां तक औषधियों का प्रश्न है तो अभी आप जो अंग्रेजी औषधि ले रहे है उनके साथ-साथ किसी अच्छी कंपनी की प्रभाकर वटी, सर्पगंधा वटी, बसन्त कुसुमाकर रस वटी, शिवा गुटका व अर्जुनत्वक चूर्ण को किसी कुशल वैद्य की देख रेख में लेना प्रारम्भ करें। दोनों समस्याओं के नियंत्रित होने पर धीरे धीरे अंग्रेजी दवाओं की मात्रा कम करते हुए त्याग दें। किसी विशिष्ट परामर्श हेतु मेरे निम्नलिखित चलभाष पर सायं ६ बजे से ६ बजे के मध्य सम्पर्क कर सकते हैं।

डॉ. भानु प्रकाश आर्य
पूर्व वरिष्ठ चिकित्सक
चलभाष- ९४१५१५८५७१

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक–श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, ५–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफ्सेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है–सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।